कृषि | खेतों की करते रहे निरंतर निगरानी, हो सकता है फसल को नुकसान

धान की फसल पर गंधी कीट का खतरा

संवाददाता, बख्शी का तालाब

अमृत विचार : चन्द्रभानु गुप्त कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के कृषि कीट विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि कम बारिश होने से प्रमुख रूप से आद्रता अधिक बढ़ने लगती है और कीट एवं बीमारियों का भी खतरा बढ़ता है। यहां पर किसानों को सतर्क रहने की आवश्यकता होती है।

डॉ. सिंह ने बताया कि धान की फसल पर गंधी कीट इस समय बहुत तेजी से नुकसान पहुंचाता है। प्रमुख रूप से इस कीट की वयस्क व निम्फ दोनों ही अवस्थाएं बहुत सक्रिय हो जाती हैं और धान की बालों की दूधिया

खेत में लगी धान की फसल।

अवस्था में निरंतर उनका रस चूसती रहती हैं। जिसके कारण धान के दानों का विकास बिल्कुल नहीं हो पाता और अधिकांश धान खोखले रह जाते हैं।

कैसे करें कीट की पहचान : इस कीट को किसान बहुत आसानी से पहचान सकते हैं। यह कीट निम्फ पीले हरित रंग के होते हैं, उनकी टांगें लंबी होती हैं और इस अवस्था में यह पंखहीन होते हैं। कुछ दिनों के बाद इसमें पंख विकसित हो जाते हैं, निम्फ अवस्था 15 से 20 दिन की होती है और इसी समय यह अधिक नुकसान पहुंचा देते हैं। जहां पर कीटों का अधिक आक्रमण होता है, वहां पर यह झुंडों में दिखाई देते हैं। और पौधों के हिलाने पर यह उड़कर दूसरी जगह पहुंच जाते हैं। कीट की जीवन अवस्था 50 से 60 दिन की होती है, इस यह बहुत अधिक नुकसान पहुंचाते हैं।

गंधी कीट का समन्वित प्रबंधन

कीट विज्ञान विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया की खड़ी फसल में इस कीट का प्रकोप होने पर कीटनाशक के द्वारा ही प्रबंध किया जा सकता है। इसके लिए जब एक-दो बालियां दिखाई देने लगे तो कारबराईल नामक 10% डस्ट को 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए। बहुत अधिक गंधी कीट दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड नामक कीटनाशक की 0 .5 एम एल मात्र को 1 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करने से इसकी कीट का प्रबंध हो जाता है। छिड़काव एक सप्ताह के अंतराल पर पुनः दोहराना चाहिए।